



INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO



LATEST
EDITION

RAJASTHAN
POLICE

राजस्थान उपनिरीक्षक

(S.I.)/प्लाटून कमांडर

HANDWRITTEN NOTES

भाग -4 भूगोल + इतिहास + राजव्यवस्था
+ अर्थव्यवस्था (भारत)



INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

उपनिरीक्षक (S.I) / प्लाटून

कमांडर

भाग - 4

भूगोल + इतिहास + राजव्यवस्था +
अर्थव्यवस्था (भारत)

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर) को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)” की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

Online order करें → <https://cutt.ly/o0zXjbh>

Whatsapp करें - → <https://wa.link/nr1tcz>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2023)

भारत का भूगोल

1. सामान्य परिचय	1
2. भौतिक विशेषताएं और प्रमुख भौतिक विभाजन	3
3. नदियाँ एवं झीलें	9
4. जलवायु	16
5. प्राकृतिक वनस्पति	18
6. भारत में मृदा	21
7. कृषि और कृषि आधारित गतिविधियां	23
8. खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	31
9. प्रमुख उद्योग और औद्योगिक विकास	44
10. परिवहन एवं प्रमुख परिवहन गलियारे	52

भारत का इतिहास

1. प्रागैतिहासिक काल (प्राचीन काल)	64
2. वैदिक संस्कृति	67
3. बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं शैव धर्म	71
4. महाजनपद काल	76
5. मौर्य काल एवं मौर्योत्तर काल	78

6. गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल	81
7. प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु	84

मध्यकालीन भारत

1. अरबों का सिन्ध पर आक्रमण	103
2. दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश	104
3. बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	114
4. मुगल साम्राज्य (1526 - 1707 ई.)	117
5. भक्ति एवं सूफी आंदोलन	125

आधुनिक भारत का इतिहास

1. 18 वीं शताब्दी के आसपास अंग्रेजों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ	128
2. 1857 ई. का विद्रोह (1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन)	135
3. सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन (19 वीं सदी)	140
4. राष्ट्रीय आंदोलन	144
5. गाँधी युग	151
6. क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक	156
7. स्वतंत्रता के आसपास का भारत	160

भारत का संविधान

1. संवैधानिक विकास	164
2. संविधान सभा	167
3. संविधान की प्रमुख विशेषताएं	169
4. संविधान की प्रस्तावना	173
5. मौलिक अधिकार	176
6. राज्य के नीति निर्देशक तत्व	179
7. मौलिक कर्तव्य / मूल कर्तव्य	181
8. संविधान संशोधन	183
9. आपातकालीन उपबंध	189
10. जनहित याचिका और न्यायिक समीक्षा	192
11. केन्द्र- राज्य सम्बन्ध	198
12. गठबंधन सरकारें	201
13. राजनीतिक दल	206
14. राष्ट्रपति	210
15. उपराष्ट्रपति	229
16. भारतीय संसद	230
17. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	237

18. सर्वोच्च न्यायालय	238
19. राज्य विधान मंडल	240
20. निर्वाचन आयोग	245
21. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक	249
22. योजना आयोग	251
23. राष्ट्रीय विकास परिषद्	253
24. केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC)	254
25. केंद्रीय सूचना आयोग	259
26. लोकपाल	264
27. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC)	266
28. स्थानीय स्वशासन और पंचायती राज	269

अर्थशास्त्र

1. अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणायें	275
2. बजट एवं बजट निर्माण	278
3. बैंकिंग	288
4. सार्वजनिक वित्त (लोक वित्त)	308
5. राष्ट्रीय आय	313

6. संवृद्धि एवं विकास का आधारभूत ज्ञान	321
7. लेखांकन - अवधारणा, उपकरण एवं प्रशासन में उपयोग	324
8. स्टॉक एक्सचेंज एवं शेयर बाजार	336
9. राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ	342
10. सब्सिडी एवं लोक वितरण प्रणाली	344
11. ई-कॉमर्स	351
12. मुद्रास्फीति - अवधारणा, प्रभाव एवं नियंत्रण तंत्र	357
13. भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र	363
14. आर्थिक समस्याएँ एवं सरकार की पहलें	369
15. मानव संसाधन एवं आर्थिक विकास	378
16. गरीबी एवं बेरोजगारी	383
17. केंद्र सरकार की योजनाएँ	391

भारत का भूगोल

अध्याय - 1

सामान्य परिचय

- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
 - भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तक है।
 - भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
 - भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. है।
 - क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में भारत का सातवाँ स्थान है। यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है।
 - जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
 - विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% (वर्ष 2011 के अनुसार) जनसंख्या भारत में रहती है।
 - भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में s दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार में है)।
भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल (लद्दाख) हैकर्स रेखा (Tropic of Cancer) भारत के बीचों -बीच से गुजरती है।
 - भारत के जिन राज्यों में से होकर कर्क रेखा गुजरती है वे हैं- गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल, त्रिपुरा और मिजोरम ।
 - भारत को पाँच प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है ।
1. उत्तर का पर्वतीय प्रदेश
 2. उत्तर का विशाल मैदान
 3. दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार
 4. समुद्री तटीय मैदान
 5. थार का मरुस्थल
- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है।

जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है।

- भारतीय मानक समय की देशांतर रेखा (82°30) उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा एवं आंध्रप्रदेश से गुजरती है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा मुख्य भूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

शीर्ष पाँच भौगोलिक क्षेत्र वाले जिले भारत में

जिला	क्षेत्रफल वर्ग किमी.
कच्छ	45652
लेह	45110
जैसलमेर	38428
बाड़मेर	28387
बीकानेर	27284

शीर्ष पाँच क्षेत्रफल वाले राज्य

राज्य	क्षेत्रफल वर्ग किमी.
राजस्थान	342239
मध्यप्रदेश	308245
महाराष्ट्र	307713
उत्तर प्रदेश	240928
गुजरात	196024

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु

दक्षिणतम बिन्दु- इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप)
 उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (लद्दाख)
 पश्चिमी बिन्दु- सर क्रीक (गुजरात)
 पूर्वी बिन्दु- किबिथु (अरुणाचल प्रदेश)
 मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य

पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर
अफगानिस्तान (1)	जम्मू और कश्मीर
चीन (5)	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

प्रमुख चैनल / जलडमरूमध्य

विभाजित स्थल खण्ड	चैनल/खाड़ी/स्ट्रेट
इन्दिरा प्वाइंट-इण्डोनेशिया	ग्रेट चैनल
लघु अंडमान-निकोबार	10° चैनल
मिनीकाय-लक्षद्वीप	9° चैनल
मालदीव-मिनीकाय	8° चैनल
भारत-श्रीलंका	मन्नार की खाड़ी
पाक की खाड़ी	पाक स्ट्रेट

- क्षेत्रफल की दृष्टि से अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह सबसे बड़ा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र-शासित प्रदेश है।

- जनसंख्या की दृष्टि से दिल्ली सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- मध्य प्रदेश भारत का सबसे बड़ा पठारी राज्य है।
- मध्य प्रदेश में वन (जंगल) सबसे अधिक हैं।
- भारत में द्वीपों की कुल संख्या 248 है बंगाल की खाड़ी में 223 तथा अरब सागर में 25 द्वीप हैं।
- पूर्वी घाट को कोरोमंडल तट के नाम से जाना जाता है।
- पश्चिमी घाट को मालाबार तट के नाम से जाना जाता है।
- उत्तर प्रदेश की सीमा सबसे अधिक राज्यों (8) को छूती है- उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं बिहार।]

अध्याय - 6

भारत में मृदा

- मिट्टी के अध्ययन को मृदा विज्ञान या पेडोलॉजी (pedology) कहा जाता है।

मृदा के प्रकार

1. जलोढ़ मृदा (तराई मृदा , बांगर मृदा, खादर मृदा)
 2. काली मृदा
 3. लाल और पीली मृदा
 4. लैटेराइट मृदा
 5. पर्वतीय मृदा
 6. मरुस्थलीय मृदा
 7. लवणीय मृदा
 8. पीट एवं जैव मृदा
- 1953 में केन्द्रीय मृदा संरक्षण बोर्ड का गठन किया गया।
 - मृदा में सबसे अधिक मात्रा में क्वार्टज खनिज पाया जाता है।
 - ऐपेटाइट नामक खनिज से मृदा को सबसे अधिक मात्रा में फास्फोरस प्राप्त होता है।
 - वनस्पति मिट्टी में ह्यूमस की मात्रा निर्धारित करती है।
 - मृदा में सामान्यतः जल 25 प्रतिशत होता है।

1. जलोढ़ मिट्टी -

- यह मिट्टी भारत के लगभग 22% क्षेत्रफल पर पायी जाती है भारत का सम्पूर्ण उत्तरी मैदान, तटीय मैदान जलोढ़ मिट्टी का बना है।
 - इसमें गाढ़, मर्तिका व रेत (slit ,clay & sand) के कण पाये जाते हैं।
 - जलोढ़ मिट्टी को कछारी मृदा भी कहा जाता है।
 - इस मृदा का निर्माण नदियों द्वारा लाए गए तलछट के निक्षेपण से हुआ है। इस प्रकार यह एक अक्षेत्रीय मृदा है।
 - इस मृदा के तीन प्रकार होते हैं -1. बांगर (bangar)
2. खादर (khadar), 3. तराई
- पुराने जलोढ़ मिट्टी के मैदान **बांगर** कहलाते हैं। **बांगर** मृदा सतलज एवं गंगा के मैदान के उपरी भाग तथा नदियों के मध्यवर्ती भाग में पाई जाती है। यहाँ बाढ़ का पानी नहीं पहुँच पाता है। इस मृदा

में चीका एवं बालू की मात्रा लगभग बराबर होती है।

- नयी जलोढ़ मिट्टी को **खादर** कहा जाता है। यह नवीन जलोढ़ मृदा है यहाँ प्रत्येक वर्ष बाढ़ का पानी पहुँचने से नवीनीकरण होता रहता है। यह मृदा खरीफ के फसल के लिए उपयुक्त होती है।
- यह नदियों द्वारा निर्मित मैदानी भाग में पंजाब से असम तक तथा नर्मदा, ताप्ती, महानदी, गोदावरी, कृष्णा व कावरी के तटवर्ती भागों में विस्तृत है।
- यह मिट्टी उच्च भागों में अपरिपक्व तथा निम्न क्षेत्रों में परिपक्व है।
- इस मिट्टी में पोटैश व चूना प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जबकि फास्फोरस, नाइट्रोजन व जीवांश का अभाव पाया जाता है।
- यह उपजाऊ मृदा है उर्वरता के दृष्टिकोण से यह काफी अच्छी मानी जाती है। इसमें धान, गेहूँ, मक्का, तिलहन, दलहन, आलू आदि फसलें उगायी जाती है।
- **तराई मृदा** में महीन कंकड़, रेत, चिकनी मृदा, छोटे - छोटे पत्थर आदि पाएँ जाते हैं।
- इस मृदा में चट्टानी कणों के होने से जल ग्रहण की क्षमता अधिक होती है।
- इस मृदा में चूने की मात्रा अधिक होती है।
- यह गन्ने की कृषि के लिए उपयुक्त होता है।

2. लाल - पीली मिट्टी :-

- यह देश के लगभग 6.1 लाख वर्ग कि.मी. (18.6%) भू-भाग में है।
- इस मिट्टी का विकास आर्कियन ग्रेनाइट, नीस तथा कुड़प्पा एवं विंध्यन बेसिनों तथा धारवाड़ शैलों की अवसादी शैलों के उपर हुआ है।
- इनका लाल रंग लौह ऑक्साइड की उपस्थिति के कारण हुआ है।
- यह मिट्टी आंशिक रूप से अम्लीय प्रकार की होती है। इसमें लौहा, एल्युमीनियम तथा चूने का अंश कम होता है तथा जीवांश (ह्यूमस), नाइट्रोजन तथा फास्फोरस की कमी पाई जाती है।
- यह मिट्टी प्रायः उर्वरता-विहीन बंजर भूमि के रूप में पायी जाती है।
- भारत में यह मृदा झारखण्ड के संथाल परगना अवाम छोटा नागपुर का पठार पश्चिम बंगाल के पठारी क्षेत्र तमिलनाडु कर्नाटक दक्षिण - पूर्व

महाराष्ट्र पश्चिमी एवं दक्षिणी आंध्रप्रदेश मध्यप्रदेश, मेघालय की गारो, खासी एवं जयन्तिया की पहाड़ी क्षेत्रों नागालैंड, राजस्थान में अरावली के पूर्वी क्षेत्र एवं छत्तीसगढ़ के अधिकांश भाग उड़ीसा एवं उत्तर प्रदेश के झाँसी ललितपुर मिर्जापुर में पाई जाती है।

- इस प्रकार के मृदा में मुख्यतः : कपास, गेहूँ, दाले, चावल एवं मोटे अनाज की कृषि की जाती है।
- तमिलनाडु व कर्नाटक में इस मृदा में रबड़ एवं कहवा का विकास किया जा रहा है।

3. काली मिट्टी -

- इसका निर्माण बेसाल्ट चट्टानों के टूटने-फूटने से होता है।
- इसमें जलधारण क्षमता सबसे अधिक होती है।
- स्थानीय भाषा में इसे रेगुर कहा जाता है।
- काली मिट्टी को स्वतः जुताई वाली मृदा भी कहा जाता है। जिसमें सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती है।
- यह मिट्टी कपास की खेती के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है।
- यह मिट्टी उष्ण उष्णकटिबंधीय चरनोजम तथा काली कपासी मिट्टी के नाम से भी जानी जाती है।
- इस मिट्टी का काला रंग टिटेनीफेरस मैंगेटाइट एवं जीवांश (ह्यूमस) की उपस्थिति के कारण होता है।
- मालवा के पठारों (malwa plateau) में काली मृदा की अधिकता है।
- यह सर्वाधिक मात्रा में महाराष्ट्र में पाई जाती है।
- इसका निर्माण दक्कन ट्रेप के लावे से हुआ है।
- इनमें लौहे, चूने, कैल्शियम, पोटेश, एल्युमिनियम तथा मैंगनीशियम कार्बोनेट से समृद्ध होती है। इनमें जीवांश, नाइट्रोजन व फास्फोरस की कमी पाई जाती है।
- भारत में यह मृदा मुख्यतः : महाराष्ट्र, पश्चिमी मध्य प्रदेश उत्तरी कर्नाटक, उत्तरी आंध्रप्रदेश, उत्तर - पश्चिमी तमिलनाडु, दक्षिण- पूर्वी राजस्थान आदि क्षेत्र में पाएँ जाते हैं।
- यह जड़दार फसलों जैसे - कपास, सोयाबीन, चना, तिलहन, खट्टे फलों तथा मोटे अनाजों के लिए उपयुक्त होती है।

4. लैटेराइट मिट्टी(Laterite soil) -

- यह देश के लगभग 1.26 लाख क्षेत्र में विस्तृत है।
- यह भारत में मुख्यतः मालाबार तटीय प्रदेश में पायी जाती है।
- यह केरल, महाराष्ट्र व असम में सबसे अधिक मात्रा में पाई जाती है।
- इनमें लौहा, सिलिका व एल्युमिनियम प्रचुर मात्रा में पाया जाता है तथा नाइट्रोजन, पोटेश, चूना व जैविक पदार्थों की इससे प्रायः कमी पाई जाती है।
- लोहे की मात्रा अधिक होने के कारण लैटेराइट मिट्टी दिनों-दिन अनुर्वर (infertile) होती जा रही है।
- अम्लीय होने के कारण इस मृदा में चाय, इलायची, मोटे अनाज, काजू एवं दलहन की कृषि की जाती है।
- गहरी लाल लैटेराइट में लौह-ऑक्साइड तथा पोटेश की बहुलता होती है। इसकी उर्वरता कम होती है।
- सफेद लैटेराइट की उर्वरता सबसे कम होती है। और केओलिन के कारण इसका रंग सफेद होता है।

5. मरुस्थलीय मिट्टी -

- यह राजस्थान, सौराष्ट्र हरियाणा तथा दक्षिणी पंजाब में पाई जाती है।
- इसमें घुलनशील लवणों तथा फास्फोरस की प्रचुरता पाई जाती है।
- सिंचाई द्वारा इसमें ज्वार, बाजरा, मोटे अनाज व सरसों आदि उगाये जाते हैं।
- यह मृदा पश्चिमी राजस्थान, दक्षिणी पंजाब, दक्षिणी हरियाणा, एवं उत्तरी गुजरात में पाई जाती है।
- मरुस्थलीय मिट्टी में नाइट्रोजन का अभाव पाया जाता है।

6. पर्वतीय मिट्टी -

- इसे वनीय मृदा भी कहा जाता है।
- ये नवीन अविकसित मृदा का रूप है जो कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश तक फैली हुई है।
- इसमें पोटेश, चूना व फास्फोरस का अभाव होता है, परन्तु जीवांश प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।
- यह मृदा प्रायः अम्लीय स्वभाव की होती है।

अध्याय - 3

बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं शैव धर्म

• बौद्ध धर्म

उदय के कारण

- छठी शताब्दी ई.पू. में वैदिक संस्कृति कर्मकाण्डों व आडम्बरों से ग्रसित हो गई।
- मध्य गंगा घाटी में इसी समय 62 सम्प्रदायों का उदय हुआ। उनमें जैन और बौद्ध सम्प्रदाय प्रमुख थे।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे। सिद्धार्थ - बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धि प्राप्त करने के लिए जन्म लेने वाला।
- जन्म 563 ई.पू. - कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। (नेपाल)
- कुल - शाक्य (क्षत्रिय कुल)
- बुद्ध की माता - महामाया थी। उनकी माँ की मृत्यु के बाद पालन पोषण महाप्रजापति गौतमी ने किया था।
- पिता - शुद्धोधन शाक्य गण के मुखिया थे।
- बौद्धों की रामायण के नाम से प्रसिद्ध बुद्धचरित के रचनाकार अश्वघोष हैं।
- 16 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध का विवाह-यशोधरा से हुआ इनके पुत्र का नाम राहुल था।

महाभिनिष्क्रमण

- 29 वर्ष की आयु में सांसारिक समस्याओं से व्यथित होकर गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था।
- अनोमा नदी के तट पर सिर मुण्डन
- काषाय वस्त्र धारण किये।
- प्रथम गुरु आलार कलाम थे।
- सांख्य दर्शन के आचार्य
- बाद में उरुवेला (बोधगया) प्रस्थान
- यहाँ पांच साधक मिले। इनमें कौण्डिय प्रमुख थे।

ज्ञान प्राप्ति -

- 35 वर्ष की आयु में - बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई। वैशाख पूर्णिमा को पीपल के वृक्ष के नीचे निरंजना नदी (पुनपुन) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई।

- इसी दिन से गौतम बुद्ध तथागत कहलाये तथा गौतम बुद्ध नाम भी यहीं से हुआ। वह स्थान बोधगया कहलाया। जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया।

धर्मचक्र प्रवर्तन-

- बुद्ध ने प्रथम उपदेश सारनाथ (ऋषिपतनम) में दिया जिसे बौद्ध ग्रन्थों में धर्मचक्रप्रवर्तन कहलाया।
- बोधगया से सारनाथ आये
- प्रथम उपदेश दिया-5 ब्राह्मण सन्यासियों को मागधी भाषा में।
- गौतम बुद्ध का बौद्ध संघ में प्रवेश हुआ।
- सर्वप्रथम अनुयायी - तपस्स जाट शुद्ध कालिक
- प्रिय शिष्य - आनन्द
- बौद्ध धर्म की प्रथम महिला भिक्षुणी - गौतमी (बुद्ध की मौसी)

अन्तिम उपदेश

- कुशीनारा में सुभच्छ को दिया
- हिरण्यवती नदी तट पर

महापरिनिर्वाण (मृत्यु)

- कुशीनारा में 483 ई.पू.
- 80 वर्ष की आयु में
- बुद्ध के अवशेष 8 भागों में डाले गये जहाँ स्तूप बनाये गये।

वैशाख पूर्णिमा का महत्व

- वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा भी कहते हैं।
- गौतम बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति
- महापरिनिर्वाण - वैशाख पूर्णिमा को अपवाद - महाभिनिष्क्रमण
- गौतम बुद्ध में 32 महापुरुषों के लक्षण बताये गये हैं।

बुद्ध के प्रमुख वचन

- जीवन कष्टों से भरा है।
- लिप्सा तृष्णा का ही दूसरा रूप है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- बुद्ध, धम्म, संघ

बुद्ध के चार आर्य सत्य

1. दुःख
2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध (निवारण)
4. प्रतिपदा

- इन्हीं का कालान्तर में विस्तार होकर ये अष्टांगिक मार्ग कहलाये।

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक दृष्टि
 2. सम्यक संकल्प
 3. सम्यक वाणी
 4. सम्यक कर्मान्त
 5. सम्यक आजीव
 6. सम्यक व्यायाम
 7. सम्यक स्मृति
 8. सम्यक समाधि
- समाधि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति।
 - जीवन-मरण चक्र से मुक्ति

बुद्ध धर्म

- अनीश्वरवादी
- पुनर्जन्म में विश्वास
- अनात्मवादी धर्म

बौद्ध धर्म के प्रतीक

- | | | |
|----------|---|-------------------|
| जन्म | - | कमल व साण्ड |
| गृहत्याग | - | घोड़ा |
| ज्ञान | - | पीपल (बोधि वृक्ष) |
| निर्वाण | - | पद-चिह्न |
| मृत्यु | - | स्तूप |
- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विस्तार कोशल राज्य में हुआ था।
 - बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये गये।
 - बौद्ध धर्म के प्रचार केन्द्र - मगध

बौद्ध संगीतियां

1. 483 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में अजातशत्रु के
 राजगृह में रचना रची गयी।
 सुत्तपिटक विनयपिटक
 (बुद्ध के उपदेश) (संघ के नियम)
 अध्यक्ष - महाकस्सप
2. 383 ई.पू. संरक्षक - कालाशोक
 वैशाली में - भिक्षुओं में मतभेद
 अध्यक्ष - सर्वकामिनी

3. 250 / 251 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में -
 अशोक

पाटलिपुत्र में रचना रची गयी

अभिधम्मपिटक

(बुद्ध के दार्शनिक विचार)

अध्यक्ष - मोग्गलिपुत्त तिस्स

4. प्रथम शताब्दी संरक्षक - कनिष्क

कुण्डलवन में हीनयान व महायान

(कश्मीर) (सम्प्रदाय में बंटा)

अध्यक्ष वसुमित्र /अश्वघोष था। चतुर्थ बौद्ध संगीति के बाद बौद्ध धर्म दो भागों में बंट गया था हीनयान व महायान।

(कश्मीर) (सम्प्रदाय में बंटा)

- विहार - बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान
- चैत्य - पूजास्थल

बौद्ध धर्म को अपनाते वाले प्रमुख शासक

- बिम्बिसार - बुद्ध का मित्र
- प्रसेनजीत
- उदायिन
- अशोक - महेन्द्र (पुत्र), संघमित्रा (पुत्री)
- बौद्ध धर्म का प्रचार करने श्रीलंका गये।

नालन्दा विश्वविद्यालय

- गुप्त शासक कुमारगुप्त ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए स्थापित किया।
- बौद्ध धर्म का अध्ययन करने हेतु आये।
- फाह्यान, हेनसांग (चीनी यात्री)।
- अजातशत्रु प्रारम्भ में जैनधर्म का अनुयायी था बाद में बौद्ध धर्म का अनुयायी बना।

बौद्ध धर्म की प्रमुख महिला अनुयायी

- गौतमी
- नन्दा
- मल्लिका
- खेमा
- विशाखा
- यशोधरा
- आम्रपाली
- सुप्रवासा

बौद्ध धर्म के प्रतीक महात्मा बुद्ध के प्रमुख आठ स्थान

- लुम्बिनी
- बोधगया
- सारनाथ
- कुशीनगर
- वैशाली
- राजगृह
- श्रावस्ती
- संकाश्य
- बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का आदर्श बोधिसत्व हैं। बोधिसत्व दूसरे के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए अपने निर्वाण में विलंब करते हैं।
- हीनयान का आदर्श अर्हत पद को प्राप्त करना है। जो व्यक्ति अपनी साधना से निर्वाण की प्राप्ति करते हैं उन्हें ही अर्हत कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म के बारे में हमें विशद ज्ञान त्रिपिटक (विनयपिटक, सुत्रपिटक, अभिधम्मपिटक) से प्राप्त होता है। इन तीनों पिटकों की भाषा पाली है।
- पालि पिटक सबसे पुराना है।
- बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथि को चीनी परम्परा के कैंटोन अभिलेख के आधार पर निश्चित किया गया है।
- पालि त्रिपिटकों को पहली शताब्दी ईसा पूर्व में श्रीलंका के शासक वत्तगामिनी की देख-रेख में पहलीबार लिपिबद्ध किया गया।
- सूत्रपिटक के पांच निकाय हैं - दीर्घ, मज्झिम, संयुक्त, अंगुत्तर, खुद्दक।
- बुद्ध के पूर्व जन्मों से जुड़ी जातक कथाएँ खुद्दक निकाय की 15 पुस्तकों में से एक हैं। खुद्दक निकाय में धम्मपद (नैतिक उपदेशों का पद्यात्मक संकलन) थेरगाथा (बौद्ध भिक्षुओं का गीत) और थेरीगाथा (बौद्ध भिक्षुणियों की गीत) हैं।
- बौद्धधर्म मूलतः अनीश्वरवादी है। इसमें आत्मा की परिकल्पना भी नहीं है।
- त्रिषणा को क्षीण हो जाने की अवस्था को ही बुद्ध ने निर्वाण कहा है।
- विश्व दुखों से भरा है का सिद्धान्त बुद्ध ने उपनिषद से लिया।
- उपासक: गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए बौद्ध धर्म अपनाने वालों को उपासक कहा गया है।
- बौद्ध संघ में सम्मिलित होने के लिए न्यूनतम आयु सीमा 15 वर्ष थी। बौद्ध संघ में प्रविष्ट होने वाले को उपसम्पदा कहा जाता था।
- सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण गंधार शैली के अंतर्गत किया गया लेकिन बुद्ध की प्रथम मूर्ति संभवतः मथुरा कला के अंतर्गत बनी थी।

- भारत में उपासना की जाने वाली प्रथम मूर्ति संभवतः बुद्ध की थी।

भारत के महत्वपूर्ण बौद्ध मठ

मठ	स्थान	राज्य केन्द्र शासित प्रदेश
टाबो मठ	तबो गाँव (स्पीति घाटी)	हिमाचल प्रदेश
नामग्याल मठ	धर्मशाला	हिमाचल प्रदेश
हेमिस मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर
थिकसे मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर
शासुर मठ	लाहुल स्पीति	हिमाचल प्रदेश
मिनझालिग मठ	देहरादून	उत्तराखण्ड
स्मटेक मठ	गंगटोक	सिक्किम
तवाँ ग मठ	अरुणाचल प्रदेश	अरुणाचल प्रदेश
नामझालिग मठ	मैसूर	कर्नाटक
बोधिमडा मठ	बोधगया	बिहार

- जैन धर्म
- जैन शब्द का निर्माण जिन से हुआ है जिसका अर्थ होता है - विजेता

अध्याय - 4

मुगल साम्राज्य (1526 - 1707 ई.)

बाबर (1526 - 1530 ई.)

- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चंगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया।
- लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की- दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलट कर दिया।
- बाबर ने मुगल साम्राज्य और मुगल सल्तनत की नींव रखी।
- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था, अधिकतर मुगल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे मुगल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।
- बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फिलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।
- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
- खानवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
- चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदनी राय और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
- घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
- नोट** - पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया था।
- उस्ताद अली एवं मुस्तफा बाबर के दो प्रसिद्ध निशानेबाज थे। जिसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भाग लिया था।
- पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर का भारत पर उसके द्वारा किया गया पांचवा आक्रमण था, जिसमें उसने इब्राहिम लोदी को हराकर विजय प्राप्त की थी और मुगल साम्राज्य की स्थापना की थी।

- बाबर की विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।
- पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए' उस्मानी विधि जिसे 'स्मी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।
- पानीपत के युद्ध में विजय की खुशी में बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक चाँदी का सिक्का दान में दिया था। अपनी इसी उदारता के कारण बाबर को 'कलन्दर' भी कहा जाता था।
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों को 'सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर अपने आपको 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।
- पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था।
- खानवा विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण की थी। इस युद्ध के लिए अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था।
- खानवा के युद्ध में मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी, यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुके बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चंगताई तुर्की में लिखा है।
- बाबरनामा में बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है। जिसका फारसी अनुवाद अब्दुरहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है। साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेंवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।

- बाबर ने 'रिसाल ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी' भी कहा जाता है।
- बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था।
- बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में 'आरामबाग-' के नाम से जाना जाता है।
- इसमें चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है। यहीं पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।
- बाबर को मुबइयान नामक पद्य शैली का जन्म दाता माना जाता है।
- बाबर को उदारता के कारण कलन्दर की उपाधि दी गयी थी।
- बाबर प्रसिद्ध नक्शबंदी सूफी ख्वाजा उबेदुल्ला अरहार का अनुयायी था।
- बाबर के चार पुत्र हिन्दाल, कामरान, अस्करी और हुमायूँ थे। जिनमें हुमायूँ सबसे बड़ा था फलस्वरूप बाबर की मृत्यु के पश्चात् उसका सबसे बड़ा पुत्र हुमायूँ अगला मुगल शासक बना।
- पित्रादुरा तकनीक का प्रयोग एत्मादुद्दौला के मकबरे में हुआ है जो ईरानी शैली का है।

हुमायूँ (1530 ई-1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुगल वंश के शासन (गद्दी) पर बैठा।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।
- हुमायूँ के सबसे बड़े शत्रु अफगान थे, क्योंकि वे बाबर के समय से ही मुगलों को भारत से बाहर खदेड़ने के लिए प्रयत्नशील थे।
- हुमायूँ का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खाँ था, जिसे शेरशाह सूरी भी कहा जाता है।
- हुमायूँ का अफगानों से पहला मुकाबला 1532 ई. में 'दौहरिया' नामक स्थान पर हुआ। इसमें अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूँ सफल रहा।
- 1532 ई. में हुमायूँ ने शेर खाँ के चुनार किले पर घेरा डाला। इस अभियान में शेर खाँ ने हुमायूँ की अधीनता स्वीकार कर ली।
- 1532 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में 'दीन पनाह' नामक नगर की स्थापना की।
- चारबाग पद्धति का प्रयोग पहली बार हुमायूँ के मकबरे में हुआ जबकि भारत में पहला बाग युक्त मकबरा सिकन्दर लोदी का था।
- हुमायूँ के मकबरे को ताजमहल का पूर्वगामी माना जाता है।
- स्वर्ण सिक्का जारी करने वाला प्रथम मुगल शासक हुमायूँ था।
- हुमायूँ ने 1535 ई. में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।
- शेर खाँ की बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूँ ने 1538 ई. में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपने अधीन कर लिया।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने बंगाल को जीतकर मुगल शासक के अधीन कर लिया। बंगाल विजय से लौटते समय 26 जून, 1539 को चौसा के युद्ध में शेर खाँ ने हुमायूँ को बुरी तरह पराजित किया।
- शेर खाँ ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूँ को पराजित कर दिल्ली पर बैठा। हुमायूँ को मजबूर होकर भारत से बाहर भागना पड़ा।
- 1544 में हुमायूँ ईरान के शाह तहमस्प के यहाँ शरण लेकर पुनः युद्ध की तैयारी में लग गया।
- 15 मई, 1555 को मच्छीवाड़ा तथा 22 जून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में सिकन्दर शाह सूरी को पराजित कर हुमायूँ ने दिल्ली पर पुनः अधिकार लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु अगले ही वर्ष 27 जनवरी, 1556 को पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गयी।
- लेनपूल ने हुमायूँ पर टिप्पणी करते हुए कहा, "हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए उसने अपनी जान दे दी।"
- बैरम खाँ हुमायूँ का योग्य एवं वफादार सेनापति था, जिसने निर्वासन तथा पुनः राजसिंहासन प्राप्त करने में हुमायूँ की मदद की।
- हुमायूँनामा की रचना गुलबदन बेगम नी की थी।
- हुमायूँ ज्योतिष में विश्वास करता था इसलिए इसने सप्ताह में सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाए।

शेरशाह सूरी (1540 ई. - 1545 ई.)

- बिलग्राम के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर 1540 ई में 67 वर्ष की आयु में दिल्ली की गद्दी पर बैठे। इसने मुगल साम्राज्य की नींव उखाड़ कर भारत में अफगानों का शासन स्थापित किया।
- शेरशाह का जन्म 1472 ई. में हुआ था। यह सुर वंश से संबंधित था।
- इसके बचपन का नाम फरीद था। शेरशाह का पिता हसन खाँ जौनपुर का एक छोटा जागीरदार था।
- दक्षिण बिहार के सूबेदार बहार खाँ लोहानी ने शेर मारने के उपलक्ष्य में फरीद खाँ की उपाधि प्रदान थी।
- शेरशाह सूरी ने ग्रेंड ट्रंक रोड का निर्माण करवाया।
- बहार खाँ लोहानी की मृत्यु के बाद शेर खाँ ने उसकी विधवा दूदू बेगम से विवाह कर लिया।
- 1539 ई. में बंगाल के शासक नुसरत शाह को पराजित करने के बाद शेर खाँ ने हजरत-ए-आला की उपाधि धारण की।
- 1539 ई. में चौसा के युद्ध में हुमायूँ को पराजित करने के बाद शेर खाँ ने शेरशाह की उपाधि धारण की।
- 1540 में दिल्ली की गद्दी पर बैठने के बाद शेरशाह ने सूरेवंश अथवा द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की।
- शेरशाह ने अपनी उत्तरी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए 'रोहतासगढ़' नामक एक सुदृढ़ किला बनवाया। एवं कन्नोज के स्थान पर शेरसूर नामक नगर बसाया।
- कबुलियत एवं पट्टा प्रथा की शुरुआत शेरशाह ने की थी।
- 1542 और 1543 ई. में शेरशाह ने मालवा और रायसीन पर आक्रमण करके अपने अधीन कर लिया।
- 1544 ई. में शेरशाह ने मारवाड़ के शासक मालदेव पर आक्रमण किया। इसमें उसे बड़ी मुश्किल से सफलता मिली। इस युद्ध में राजपूत सरदार 'जैता' और 'कुंपा' ने अफगान सेना के छक्के छुड़ा दिए।
- 1545 ई में शेरशाह ने कालिंजर के मजबूत किले का घेरा डाला, जो उस समय कीरत सिंह के अधिकार में था, परन्तु 22 मई 1545 को बारूद के ढेर में विस्फोट के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- भारतीय इतिहास में शेरशाह अपने कुशल शासन प्रबंध के लिए जाना जाता है।
- शेरशाह ने भूमि राजस्व में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया, जिससे प्रभावित होकर अकबर ने अपने शासन को प्रबंध का अंग बनाया।

- शेरशाह सूरी ने प्रसिद्ध ग्रेंड ट्रंक रोड (पेशावर से कलकत्ता) की मरम्मत, करवाकर व्यापार और आवागमन को सुगम बनाया।
- डाक - प्रथा की शुरुआत शेरशाह के द्वारा ही किया गया था।
- मलिक मुहम्मद जायसी शेरशाह के समकालीन थे।
- शेरशाह का मकबरा बिहार के सासाराम में स्थित है, जो मध्यकालीन कला का एक उत्कृष्ट नमूना है।
- दिल्ली में द्वितीय अफगान वंश का संस्थापक शेरशाह सूरी था।
- शेरशाह के शासन काल में भू-राजस्व की वसूली की निगरानी करने वाले अधिकारी को मुंसिफ अथवा आमिल कहते हैं।
- शेरशाह की मृत्यु के बाद भी सूर वंश का शासन 1555 ई. में हुमायूँ द्वारा पुनः दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने तक कायम रहा।
- शेरशाह ने भूमि की माप के लिए 32 अंकवाडा सिकन्दरी गज एवं सन की डंडी का प्रयोग किया। इसने 178 ग्रेन चाँदी का रुपया व 380 ग्रेन ताम्बे के दाम चलाये।
- शेरशाह के समय पैदावार का लगभग 1/3 भाग सरकार लगान के रूप वसूल करती थी।

अकबर (1556 - 1605)

- हुमायूँ की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अकबर का कलानौर नामक स्थान पर 14 फरवरी, 1556 को मात्र 13 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ।
- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 को अमरकोट के राजा वीरमाल के प्रसिद्ध महल में हुआ था।
- अकबर ने बचपन से ही गजनी और लाहौर के सूबेदार के रूप में कार्य किया था।
- भारत का शासक बनने के बाद 1556 से 1560 तक अकबर बैरम खाँ के संरक्षण में रहा।
- अकबर ने बैरम खाँ को अपना वजीर नियुक्त कर खान-ए-खाना की उपाधि प्रदान की थी।
- 5 नवम्बर, 1556 को पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर की सेना का मुकाबला अफगान शासक मुहम्मद आदिल शाह के योग्य सेनापति हैमू की सेना से हुआ, जिसमें हैमू की हार एवं मृत्यु हो गयी।
- 1560 से 1562 ई. तक दो वर्षों तक अकबर अपनी धाय माँ महम अनगा, उसके पुत्र आदम खाँ तथा उसके सम्बन्धियों के प्रभाव में रहा। इन दो वर्षों के शासनकाल को पेटिकोट सरकार की संज्ञा दी गयी है।
- अकबर ने दक्षिण भारत के राज्यों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था। खानदेश (1591), दौलताबाद (1599), अहमदनगर (1600) और

अध्याय - 4

राष्ट्रीय आंदोलन

• राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण

(1) ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ

- ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग-अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक-राजनीतिक संरचना स्थापित की।
- इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बचे।
- वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया। दरअसल एक साझे एकजुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
- ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे-रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया।
- फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ। इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया। फलतः एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एककिया एवं मध्यवर्ग होकर बेंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्क्वी डार्विन के विचारों से परिचित हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा।
- इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके

औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। इसी संदर्भ में यह कहा गया कि “भारतीयों ने पश्चिमी हथौड़े से पश्चिमी बेडियों को तोड़ डाला”।

(2) सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछूत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परंपरा को उद्धृत कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।
- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे - स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) लिटन और कर्जन की नीतियाँ :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया। लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया। साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी।
- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।

- कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया। तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की। इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ। इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गया कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।'

(5) रिपन की नीतियाँ :-

- वायसराय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिल' विवाद सामने आया। जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया। वस्तुतः इल्बर्ट बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया गया।
- किंतु अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता है। अतः रिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे हैं और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगों को मनवाया जा सकता है।

• कांग्रेस की स्थापना :-

- कांग्रेस शब्द संयुक्त राज्य अमेरिका से लिया गया है जिसका अर्थ लोगों का समूह है। इसका आरंभिक नाम इंडियन नेशनल यूनियन रखा गया और प्रथम सम्मेलन पुणे में आयोजित करने की घोषणा की गई।
- किंतु वहाँ प्लेग फैलने के कारण यह सम्मेलन बाम्बे में हुआ वहाँ प्लेग और दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया।
- कांग्रेस का संस्थापक एक ब्रिटिश सेवानिवृत्त अधिकारी A.O. ह्यूम था। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। इसमें 72 लोग सदस्य बने।
- कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदारुद्दीन तैय्यब थे जो 1887 में मद्रास अधिवेशनमें अध्यक्ष बने।

कांग्रेस की स्थापना के संबंध में विवाद :

(i) सेफ्टी वाल्व सिद्धांत सुरक्षा कपाट सिद्धांत

- इस सिद्धांत का प्रतिपादन लाला लाजपत राय ने किया। उन्होंने ह्यूम के जीवनी लेखक विलियम वेडरबर्न को आधार बनाकर अपनी अवधारणा 'यंग इंडिया' लेखों में प्रकाशित किया और कहा कि कांग्रेस लार्ड डफरिन के मस्तिष्क की उपज है।
- वस्तुतः भारतीय असंतोष को पहले ही जान लेने के लिए इस संस्था का गठन किया। दरअसल लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की यह आलोचना उसके उदारवादी नेतृत्व पर प्रहार करने के क्रम में की।

(ii) तड़ित चालक सिद्धांत

- गोपाल कृष्ण गोखले ने इस सिद्धांत के तहत कांग्रेस की स्थापना को स्पष्ट करते हुए कहा कि सरकारी असंतोष से बचने के लिए भारतीय नेताओं ने ह्यूम का प्रयोग किया।
- वस्तुतः कांग्रेस का संस्थापक यदि इस समय कोई अंग्रेज नहीं होता, तो आरंभ में ही यह संस्था ब्रिटिश दमन का शिकार हो सकती थी। अतः ब्रिटिश दमन से बचने के लिए भारतीयों ने ह्यूम का नेतृत्व स्वीकार किया जो एक ब्रिटिश अधिकारी थे।

• उदारवादी आंदोलन

पृष्ठभूमि :-

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की आरंभिक राजनीति राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादी या नरमपंथी राजनीति के नाम जानी जाती है।
- इसके प्रमुख नेता दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, जे. घोषाल, बदरुद्दीन तैय्यब महादेव गोविन्द रानाडे, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी मदनमोहन मालवीय आदि थे।

विचारधारा:

- उदारवादी कांग्रेसी नेता ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास करते थे। अर्थात् ब्रिटिश संसद एवं जनता में इनका अटूट विश्वास था। अतः यह संवैधानिक मार्गों पर चलकर अधिकार प्राप्त करने पर बल देते थे।
- उदारवादियों का मानना था कि भारतीय जनता अशिक्षित है। अतः इसे आंदोलन शामिल नहीं करना चाहिए। इस तरह, भारत की आम जनता में इनका विश्वास नहीं था।
- उदारवादियों का मानना था कि ब्रिटिश शासन भारत में एक बरदान है और यह भारत को धीरे-धीरे लोकतांत्रिक शासन की ओर ले जाएगा। इसलिए उन्होंने कभी ब्रिटिश साम्राज्य से अलग होने की बात नहीं की। बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत स्वशासन की प्राप्ति पर बल दिया।
- उदारवादियों का मानना था कि इंग्लैंड में मौजूद ब्रिटिश रूल बेहद प्रगतिशील है। वहाँ संसदीय शासन प्रणाली है जहाँ जनता के अधिकार सुरक्षित हैं नागरिकों को अपनी मांग रखने का अधिकार है, प्रेस की स्वतंत्रता है, आर्थिक प्रशासनिक स्तर पर नागरिकों के साथ कोई भेदभाव नहीं है, वैज्ञानिक तकनीकी शिक्षा मौजूद है।
- अतः इंग्लैंड का आर्थिक औद्योगिक विकास हो रहा है। इससे वहाँ के लोगों के जीवन में समृद्धि आ रही है। इस तरह इंग्लैंड में स्थापित ब्रिटिश रूल प्रगतिशील है, और यह लोक-कल्याण स्वरूप से युक्त है। जबकि भारत में भी ब्रिटिश नियंत्रण है।
- यहाँ ब्रिटिश अधिकारियों के होते हुए भी ब्रिटिश रूल की स्थापना नहीं की गयी है, यहाँ लोकतांत्रिक शासन नहीं है, प्रतिनिधि संस्थानों में भारतीयों ककी

पर्याप्त भागीदारी नहीं है। भारतीयों को नागरिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। प्रेस पर सरकारी नियंत्रण है।

- प्रशासनिक सेवाओं में भारतीय नागरिकों के साथ भेदभाव किया जाता है। वैज्ञानिक - तकनीकी शिक्षा का प्रसार नहीं है। ब्रिटिश नीतियों की वजह से भारत में कृषि का पिछड़ापन है।
- हस्तशिल्प उद्योगों का पतन हो गया है। अतः गरीबी, ऋणग्रस्तता और अकाल की बारंबारता मौजूद है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था एक ऋणग्रस्त एवं पिछड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जानी जाती है। वस्तुतः इन सबका कारण भारत में अंग्रेजों द्वारा स्थापित अनब्रिटिश रूल है।

कार्यपद्धति :

- उदारवादी नेता ब्रिटिश जनमत को प्रभावित कर क्रमिक सुधारों पर बल देते थे। अतः उन्होंने लंदन में प्रचार कार्य पर बल दिया।
- उदारवादी नेता प्राथना पत्र, स्मरण -पत्र तथा विभिन्न लेखों के माध्यम से अपनी समस्याओं को प्रस्तुत कर समाधान की मांग करते थे। वस्तुतः उदारवादी संवैधानिक तरीके से अपनी मांग रखकर रक्तहीन संघर्ष में विश्वास करते थे।

मांगे

- भारतीय विधायिका में भारतीयों की संख्या बढ़ाई जाए।
- कनाडा और ऑस्ट्रेलिया के समान ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन भारत को स्वशासन दिया जाए।
- भेद-भाव मूलक शस्त्र अधिनियम की समाप्ति हो तथा सैन्य व्यय में कटौती की जाए एवं धन की निकासी रोका जाए।
- सिविल सेवा का भारतीयकरण किया जाए और इस परीक्षा के लिए उम्र सीमा में वृद्धि की जाए तथा परीक्षा भारत में आयोजित की जाए।
- स्थायी बंदोबस्त अन्य क्षेत्रों में लागू किया जाए।

अध्याय - 2

संविधान सभा

- भारत में संविधान सभा के गठन का विचार वर्ष 1934 में पहली बार एम. एन. रॉय ने रखा।
- 1935 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पहली बार भारत के संविधान निर्माण के लिए आधिकारिक रूप से संविधान सभा के गठन की मांग की।
- 1938 में जवाहर लाल नेहरू ने घोषणा की स्वतंत्र भारत के संविधान का निर्माण वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनी गई संविधान सभा द्वारा किया जायेगा। नेहरू की इस मांग को ब्रिटिश सरकार ने सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया। इसे 1940 के अगस्त प्रस्ताव के रूप में जाना जाता है।
- क्रिप्स मिशन 1946 में भारत आया।

क्रिप्स मिशन

- लॉर्ड सर पैथिक लॉरेंस (अध्यक्ष)
- ए. वी. अलेक्जेंडर
- सर स्टेफोर्ड क्रिप्स
- 1946 ई. को ब्रिटेन के प्रधान मंत्री क्लिमेंट एटली ने ब्रिटिश मंत्रिमंडल के तीन सदस्य (सर स्टेफोर्ड क्रिप्स, लॉर्ड पैथिक लॉरेंस तथा ए. वी. अलेक्जेंडर) को भारत भेजा जिसे कैबिनेट मिशन कहा गया।
- कैबिनेट का मुख्य कार्य संविधान सभा का गठन कर भारतीयों द्वारा अपना संविधान बनाने का कार्य करना था।
- भारत में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में अंतरिम सरकार का गठन कैबिनेट मिशन योजना के तहत किया गया था। अंतरिम मंत्रिमंडल अंग इस प्रकार था।

अंतरिम सरकार

जवाहर लाल नेहरू - स्वतंत्र भारत का पहला मंत्रिमंडल (1947)

सरदार वल्लभभाई पटेल - गृह, सूचना एवं प्रसारण

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद - खाद्य एवं कृषि

जॉन मथाई - उद्योग एवं नागरिक आपूर्ति

जगजीवन राम - श्रम

सरदार बलदेव सिंह - रक्षा

सी. एच. भाभा - कार्य, खान एवं ऊर्जा
 लियाकत अली खां - वित्त
 अब्दुर रख निश्तार - डाक एवं वायु
 आसफ अली - रेलवे एवं परिवहन
 सी. राजगोपालाचारी - शिक्षा एवं कला
 आई. आई. चुंदरीगर - वाणिज्य
 गजनपर अली खान - स्वास्थ्य
 जोगेंद्र नाथ मंडल - विधि

- कैबिनेट मिशन द्वारा प्रस्तुत किए गए सुझावों के अनुसार नवंबर 1946 में संविधान सभा का गठन हुआ। मिशन की योजना के अनुसार संविधान सभा का स्वरूप निम्नलिखित प्रकार का होना था -
- संविधान सभा के कुल सदस्यों की संख्या 389 होनी थी। इनमें से 296 सीटें ब्रिटिश भारत के प्रांतों को और 93 सीटें देशी रियासतों को दी जानी थी।
- हर ब्रिटिश प्रांत एवं देशी रियासत को उसकी जनसंख्या के अनुपात में सीटें दी जानी थी। आमतौर पर प्रत्येक 10 लाख लोगों पर एक सीट का आवंटन होना था।
- प्रत्येक ब्रिटिश प्रांत को दी गई सीटों का निर्धारण तीन प्रमुख समुदायों के मध्य उनकी जनसंख्या के अनुपात में किया जाना था। यह तीन समुदाय थे :- मुस्लिम, सिख व सामान्य (मुस्लिम और सिख को छोड़कर)।
- देशी रियासतों के प्रतिनिधियों का चयन चुनाव द्वारा नहीं, बल्कि रियासत के प्रमुखों द्वारा किया जाना था।
- कैबिनेट योजना के अनुसार ब्रिटिश भारत के लिए आवंटित 296 सीटों के लिए चुनाव जुलाई-अगस्त 1946 में संपन्न हुए।
- इस चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 208, मुस्लिम लीग को 73 तथा छोटे दलों व निर्दलीय सदस्यों को 15 सीटें मिली।
- महात्मा गाँधी और मोहम्मद अली जिन्ना को छोड़ दे तो संविधान सभा में उस समय के भारत के सभी प्रसिद्ध व्यक्तित्व शामिल थे।
- 9 दिसम्बर 1946 ई. को संविधान सभा की प्रथम बैठक हुई जिसमें मुस्लिम लीग ने भाग नहीं लिया।
- संविधान सभा का अधिवेशन 9 दिसम्बर 1946 को कन्द्रीय कक्ष में संपन्न हुआ। डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा

को सर्व सम्मति से संविधान सभा का अस्थायी अध्यक्ष चुन लिया गया।

- 11 दिसम्बर 1946 ई. को कांग्रेस के नेता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। जो की अन्त तक इसके अध्यक्ष बने रहे।

उद्देश्य प्रस्ताव :-

- 13 दिसम्बर 1946 को जवाहरलाल नेहरू ने सभा में उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया।
- संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 को वर्तमान संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में हुई। मुस्लिम लीग ने इस बैठक का बहिष्कार किया और अलग पाकिस्तान की मांग उठाई।
- सभा के सबसे वरिष्ठ सदस्य डॉ सच्चिदानंद सिन्हा को सभा का अस्थाई अध्यक्ष बनाया गया।
- 2 दिन पश्चात 11 दिसंबर 1946 को डॉ राजेन्द्र प्रसाद को सभा का स्थाई अध्यक्ष बनाया गया, जो 22 जनवरी 1947 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत किया गया। संक्षेप में इस प्रस्ताव की मुख्य बातें निम्नलिखित थी :-
- भारत को एक स्वतंत्र तथा संप्रभु गणराज्य के रूप में स्थापित किया जाए।
- भारत के समस्त नागरिक को विचार, अभिव्यक्ति, संस्था बनाने, कोई व्यवसाय करने, किसी भी धर्म को मानने या न मानने कि स्वतंत्रता होगी।
- अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जातियों तथा पिछड़े वर्गों के हितों की सुरक्षा के लिए उपयुक्त रक्षा के उपाय किए जाएंगे।
- देश की एकता को स्थायित्व प्रदान किया जाएगा।
- यही उद्देश्य प्रस्ताव संविधान की 'प्रस्तावना' का आधार बना और इसी ने संपूर्ण संविधान के दर्शन को मूर्त रूप प्रदान किया।

संविधान सभा की कार्य प्रणाली

अस्थायी अध्यक्ष - सच्चिदानंद सिन्हा
 अध्यक्ष - डा. राजेन्द्र प्रसाद
 उपाध्यक्ष - डा. एच. सी मुखर्जी, व वी०टी० कृष्णामाचारी

संविधान सभा के अन्य कार्य

- मई 1949 में राष्ट्रमंडल में भारत की सदस्यता।
- 22 जुलाई 1947 को राष्ट्रीय ध्वज को अपनाया।

- 24 जनवरी 1950 को राष्ट्रगान को अपनाया।
- 26 जनवरी 1950 को राष्ट्रीय गीत को अपनाया।
- 24 जनवरी 1950 को राजेन्द्र प्रसाद को भारत के पहले राष्ट्रपति चुनना।
- 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में कुल 11 बैठके हुई, लगभग 60 देशों का संविधान का अवलोकन, इसके प्रारूप पर 114 दिन तक विचार हुआ कुल खर्च 64 लाख रुपया आया।
- 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा की अन्तिम बैठक हुई।

संविधान सभा की समितियां

संघ शक्ति समिति - जवाहर लाल नेहरू
 संघीय संविधान समिति - जवाहरलाल नेहरू
 प्रांतीय संविधान समिति - सरदार वल्लभ भाई पटेल
 प्रारूप समिति - डॉ. बी. आर. अंबेडकर
 मौलिक अधिकारी, अल्पसंख्यकों एवं जनजातियों तथा बहिष्कृत क्षेत्रों के लिए सलाहकार समिति - सरदार पटेल
 प्रक्रिया नियम समिति - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
 राज्यों के लिए समिति - जवाहरलाल नेहरू
 संचालन समिति - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

प्रारूप समिति

- अम्बेडकर (अध्यक्ष)
- एन गोपालस्वामी आयंगर
- अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर
- डॉ. के. एम मुंशी
- सैयद मोहम्मद सादुल्ला
- एन. माधव राव (बी. एल. मिल की जगह)
- टी. टी. कृष्णामाचारी (डी.पी खेतान की जगह)
- 4 नवम्बर 1948 को अंबेडकर ने सभा में संविधान का अन्तिम प्रारूप पेश किया गया। इस बार संविधान पहली बार पढ़ा गया।
- संविधान सभा के 299 सदस्यों में से 284 लोगों ने संविधान पर हस्ताक्षर किया।
- 26 नवम्बर 1949 को अपनाए गये संविधान में प्रस्तावना, 395 अनुच्छेद व 8 अनुसूचियां थी।

संविधान सभा द्वारा हाथी का प्रतीक (मुहर) के रूप में अपनाया।

- उपराष्ट्रपति को राष्ट्रपति के रूप में कार्य करने की अवधि अधिकतम 6 महीने की होती है।
- भारत का राष्ट्रपति अपना त्यागपत्र उपराष्ट्रपति को देता है।
- **art-68** उपराष्ट्रपति के पदमुक्त होने तथा पुनः उपराष्ट्रपति के चुनाव / निर्वाचन से संबंधित है।
- उपराष्ट्रपति को राज्यसभा के प्रभावी बहुमत से पारित और लोकसभा के साधारण बहुमत से अनुमोदित प्रस्ताव के द्वारा पदमुक्त किया जायेगा।

भारत के उप राष्ट्रपति		
क्र.स.	नाम	कार्यकाल
1.	डॉ. एस. राधाकृष्णन	1952-1962
2.	डॉ. जाकिर हुसैन	1962-1967
3.	वी. वी. गिरि	1967-1969
4.	गोपाल स्वरूप पाठक	1969-1974
5.	बी. डी. जत्ती	1974-1979
6.	न्यायमूर्ति मो.हिदायतुल्ला	1979-1984
7.	आर. वेंकटरमण	1984-1987
8.	डॉ. शंकर दयाल शर्मा	1987- 1992
9.	के. आर. नारायण	1992- 1997
10.	कृष्णकांत	1997- 2002
11.	भैरो सिंह शेखावत	2002- 10.08.2007
12.	हामिद अंसारी	11.08.2007- 11.08.2017
13.	एम. वेंकैया नायडू	11.08.2017- --

- उपराष्ट्रपति बनने से पहले डॉ. एस. राधाकृष्णन सोवियत संघ में राजदूत थे।
- राज्य सभा का सभापति उपराष्ट्रपति होता है।
- भारत के उपराष्ट्रपति को पद से हटाने सम्बन्धी प्रस्ताव केवल राज्य सभा में लाया जा सकता है।
- उपराष्ट्रपति का वेतन भारत भारत की संचित निधि पर भारित होता है।

अध्याय - 16

भारतीय संसद

संघीय विधानमंडल (संसद)

- भारतीय संविधान के अनु. 79 के अनुसार संसद के तीन अंग होते हैं - राष्ट्रपति, राज्यसभा और लोकसभा
- भारतीय संसद की संप्रभुता न्यायिक समीक्षा से प्रतिबंधित है।
- संसद में स्थगन प्रस्ताव (adjournment motion) लाने का उद्देश्य सार्वजनिक महत्व के अति आवश्यक मुद्दों पर बहस करना है।

संसद से सम्बंधित अनुच्छेद

अनु.	सम्बंधित विषय - वस्तु
79	संसद का गठन
80	राज्य सभा की संरचना
81	लोक सभा की संरचना
82	प्रत्येक जनगणना के पश्चात पुनः समायोजन
83	संसद के सदनों की अवधि
84	संसद की सदस्यता के लिए अर्हता
85	संसद के सत्र सत्रावसान एवं विघटन
86	राष्ट्रपति का सदनों को सम्बोधित तथा उनको संदेश देने का अधिकार
87	राष्ट्रपति का विशेष सम्बोधन अभिभाषण
88	सदनों के सम्बंध में मंत्रियों और महान्यायवादी के अधिकार
89	राज्य सभा का सभापति तथा उपसभापति
90	राज्य सभा के उपसभापति के पद की रिक्ति, त्याग तथा पद से हटाया जाना।
91	सभापति के कर्तव्यों के निर्वहन अथवा सभापति के रूप में कार्य करने की उपसभापति अथवा अन्य व्यक्ति की शक्ति
92	जब राज्य सभा के सभापति अथवा उपसभापति को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना

93	लोक सभा का अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष
94	लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष पद की रिक्ति, त्यागपत्र तथा पद से हटाया जाना
95	लोक सभा उपाध्यक्ष अथवा किसी अन्य व्यक्ति का लोक सभा अध्यक्ष के कर्तव्यों के निर्वहन की शक्ति
96	जब लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना।
97	सभापति व उपसभापति तथा अध्यक्ष व उपाध्यक्ष के वेतन-भत्ते
98	संसद का सचिवालय
99	सदस्यों द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान
100	दोनों सदनो में मतदान, रिक्तियों के होते हुए भी सदनो की कार्य करने की शक्ति तथा गणपूर्ति
101	स्थानों का रिक्त होना
102	संसद की सदस्यता के लिए निरहर्ताएं
103	सदस्यों की अयोग्यता से सम्बंधित प्रश्नों पर निर्णय
104	अनु. 99 के अंतर्गत शपथ लेने या प्रतिज्ञान करने से पहले अर्हत न होते अथवा निरहर्त किए जाने पर भी सदन में बैठने तथा मतदान करने पर दंड।

लोकसभा (art-81)

- लोकसभा को निम्न सदन / प्रथम सदन / अस्थाई सदन / लोकप्रिय सदन कहते हैं।
- प्रथम लोकसभा का गठन 17 अप्रैल, 1952 को हुआ था।
- अनुच्छेद 81 तथा 331 लोकसभा के गठन से संबंधित हैं।
- लोकसभा में अधिकतम 552 सदस्य हो सकते हैं। इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि केंद्र शासित प्रदेशों से 20 सदस्य चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- लोकसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 545 से इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि 13 सदस्य केंद्र शासित प्रदेशों से चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल

- भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- 91वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2001 में प्रावधान किया गया है कि लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 सन् 2026 तक बनी रहेगी।
- लोकसभा का कार्यकाल अपनी प्रथम बैठक से अगले 5 वर्ष तक होती है।
- **लोकसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएं होनी आवश्यक हैं:**
 - वह भारत का नागरिक हो।
 - उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो।
 - वह संघ सरकार तथा राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो (सरकारी नौकरी में न हो)
 - वह पागल / दिवालिया न हो।
- लोकसभा - अध्यक्ष का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है,
- किन्तु अपने पद से वह स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है अथवा अविश्वास प्रस्ताव द्वारा उसे हटाया जा सकता है।
- 61वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1989 के द्वारा यह व्यवस्था कर दी गई कि 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाला नागरिक लोकसभा या राज्य विधानसभा के सदस्यों को चुनने के लिए वयस्क माना जाएगा।
- लोकसभा विघटन की स्थिति में 6 मास से अधिक नहीं रह सकती।
- लोकसभा का गठन अपने प्रथम अधिवेशन की तिथि से पाँच वर्ष के लिए होता है।
- लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर लोकसभा का विघटन राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष के पहले भी किया जा सकता है।
- क्योंकि लोकसभा के दो बैठकों के बीच का समयान्तराल 6 मास से अधिक नहीं होना चाहिए।
- लोकसभा की अवधि एक बार में 1 वर्ष से अधिक नहीं बढ़ायी जा सकती है।
- आपात उद्घोषणा की समाप्ति के बाद 6 माह के अन्दर लोकसभा का सामान्य चुनाव कराकर उसका गठन आवश्यक है।
- लोकसभा का अधिवेशन 1 वर्ष में कम से कम 2 बार होना चाहिए

- अनुच्छेद 85 के तहत राष्ट्रपति को समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन, राज्यसभा एवं लोकसभा को आहूत करने, उनका सत्रावसान करने तथा लोकसभा का विघटन करने का अधिकार प्राप्त है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा का प्रमुख पदाधिकारी होता है और लोकसभा की सभी कार्यवाहियों का संचालन करता है -
- लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है।
- लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की तिथि राष्ट्रपति निश्चित करता है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा के सामान्य सदस्य के रूप में शपथ लेता है।
- लोकसभा अध्यक्ष को कार्यकारी अध्यक्ष शपथ ग्रहण कराता है।
- आगामी लोकसभा चुनाव के गठन के बाद उसके प्रथम अधिवेशन की प्रथम बैठक तक अपने पद पर बना रहता है। लोकसभाध्यक्ष उपाध्यक्ष को अपना त्यागपत्र दे देता है।

राज्यों में लोकसभा सदस्यों की संख्या

1. उत्तर प्रदेश	80
2. महाराष्ट्र	48
3. पश्चिम बंगाल	42
4. बिहार	40
5. तमिलनाडु	39
6. मध्य प्रदेश	29
7. कर्नाटक	28
8. गुजरात	26
9. राजस्थान	25
10. आंध्र प्रदेश	25
11. ओडिशा	21
12. केरल	20
13. तेलंगाना	17
14. असम	14
15. झारखण्ड	14
16. पंजाब	13
17. छत्तीसगढ़	11
18. हरियाणा	10
19. जम्मू / कश्मीर	6
20. उत्तराखण्ड	5
21. हिमाचल प्रदेश	4

22. आंध्रप्रदेश	2
23. गोवा	2
24. मणिपुर	2
25. मेघालय	2
26. त्रिपुरा	2
27. मिजोरम	1
28. नागालैंड	1
29. सिक्किम	1

केन्द्रशासित प्रदेश लोकसभा सदस्यों की संख्या

1. दिल्ली	7
2. अंडमान निकोबार	1
3. चण्डीगढ़	1
4. दादरा / नागर हवेली	1
5. दमन एवं दीव	1
6. लक्षद्वीप	1
7. पुदुचेरी	1

राज्यसभा (art-80)

- राज्यसभा को उच्च सदन /द्वितीय सदन /स्थायी सदन / संघीय सदन भी कहा जाता है।
- राज्यसभा राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है।
- यह एक स्थाई सदन है और कभी भंग नहीं होता
- किन्तु इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष के बाद स्थान खाली कर देते हैं, जिनकी पूर्ति नए सदस्यों से होती है।
- भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है।
- राज्यसभा में अधिक-से-अधिक 250 सदस्य हो सकते हैं। इनमें 238 राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों से निर्वाचित और 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत होते हैं। ये 12 सदस्य ऐसे होते हैं जिन्हें साहित्य, विज्ञान, कला सामाजिक सेवा इत्यादि का विशेष ज्ञान होता है।
- राज्यसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 245 में , राज्यों से 233 तथा राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत 12 सदस्य होते हैं।
- **राज्यों के प्रतिनिधि** - सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रीति से होता है। राज्यों के प्रतिनिधि अपने राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा निर्वाचित



गिफ्ट-आईएफएससी

- गिफ्ट सिटी में विश्व स्तरीय विदेशी विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों को अनुमति प्रदान की जाएगी।
- अंतरराष्ट्रीय न्यायशास्त्र के तहत विवादों के समय पर समाधान के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता केंद्र स्थापित किया जाएगा।

केंद्रीय बजट 2022-23: संसाधनों का अभिनियोजन

- डाटा सेंटर एवं ऊर्जा भंडारण तंत्र (एनर्जी स्टोरेज सिस्टम) को अवसंरचना का दर्जा प्रदान किया जाएगा।
- जोखिम पूंजी (वेंचर कैपिटल) एवं व्यक्तिगत इक्विटी (प्राइवेट इक्विटी) ने विगत वर्ष सर्वाधिक वृहद से एक स्टार्ट-अप एवं विकास पारिस्थितिकी (ग्रोथ इकोसिस्टम) को सुविधाजनक बनाने के लिए 5 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया। इस निवेश में वृद्धि करने में सहायता करने हेतु उपाय किए जाने चाहिए।
- नवोदित एवं विकासशील क्षेत्रों के लिए समिश्रित निधि को प्रोत्साहित किया जाएगा।
- हरित आधुनिक अवसंरचना के लिए संसाधनों की अभिनियोजन हेतु सार्वभौम हरित ऋण पत्र (सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड) जारी किए जाएंगे।

डिजिटल रुपया

- केंद्रीय बजट 2022-23 में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 2022-23 से डिजिटल रुपए को प्रारंभ करने का प्रावधान करता है।

राज्यों को अधिक राजकोषीय स्थान प्रदान करना

- 'पूंजीगत निवेश के लिए राज्यों को वित्तीय सहायता योजना' के लिए परिवर्धित परिव्ययः
- बजट अनुमान में 10,000 करोड़ रुपये से चालू वर्ष के संशोधित अनुमानों में 15,000 करोड़ रुपये
- अर्थव्यवस्था में समग्र निवेश को उत्प्रेरित करने में राज्यों की सहायता के लिए 2022-23 में 1 लाख करोड़ रुपये का आवंटन: सामान्य उधार के अतिरिक्त पचास वर्षीय ब्याज मुक्त ऋण
- 2022-23 में, राज्यों को जीएसडीपी के 4% के राजकोषीय घाटे की अनुमति प्रदान की जाएगी, जिसमें से 5% ऊर्जा क्षेत्र के सुधारों से जुड़े होंगे

अध्याय - 3

बैंकिंग

- बैंक उस वित्तीय संस्था को कहते हैं जो जनता की धनराशि जमा करने तथा जनता को ऋण देने का काम करती हैं।
- लोग अपनी बचत राशि को सुरक्षा की दृष्टि से अथवा ब्याज कमाने हेतु इन संस्थाओं में जमा करते हैं और आवश्यकता अनुसार समय-समय पर निकालते रहते हैं।
- बैंक इस प्रकार जमा से प्राप्त राशि को व्यापारियों एवं व्यवसायियों को ऋण देकर ब्याज कमाते हैं।

भारत में बैंकिंग

- भारत में स्थापित पहली बैंक Bank of Hindustan थी इसकी स्थापना Alexandey and Company 1770ई. में की थी कुछ समय बाद यह बैंक बन्द हो गई।
- इसके बाद देश में निजी और सरकारी अंशधारियों द्वारा तीन प्रेसीडेंसी बैंकों की स्थापना की गई - वर्ष 1806 में बैंक ऑफ बंगाल (Bank of Bengal) , वर्ष 1840 में बैंक ऑफ बॉम्बे (Bank of Bombay) तथा वर्ष 1843 में बैंक ऑफ मद्रास (Bank of Madras) ।
- इन तीनों बैंकों पर बैंक ऑफ मद्रास अपना नियंत्रण रखती थी । बाद में इन बैंकों के कार्यों को सीमित कर दिया गया । वर्ष 1921 में इन तीनों बैंकों को मिलाकर इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया (Imperial Bank of India) की स्थापना की गई और । जुलाई, 1955 को राष्ट्रीयकरण के उपरान्त इसका नाम बदलकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया रख दिया गया ।
- भारत में पहली सीमित देयता वाला भारतीय बैंक अवध कमर्शियल बैंक था जिसकी स्थापना फैजाबाद में वर्ष 1881 में की गयी थी ।
- उसके बाद वर्ष 1894 में लाहौर में पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना हुई जो पहला पूर्ण रूप से प्रथम भारतीय बैंक था ।



भारत में स्थापित प्रमुख बैंक व उनकी स्थापना

बैंक का नाम	स्थापना वर्ष
द बैंक ऑफ हिन्दुस्तान	1770
बैंक ऑफ बंगाल	1806
बैंक ऑफ बॉम्बे	1840
बैंक ऑफ मुद्रास	1843
इलाहाबाद बैंक	1865
एलाइन्स बैंक ऑफ शिमला	1881
अवध कॉमर्शियल बैंक	1881
पंजाब नेशन बैंक	1894
बैंक ऑफ इंडिया	1906
पंजाब एंड सिंध बैंक	1908
बैंक ऑफ बड़ौदा	1909
सेण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	1911
बैंक ऑफ मैसूर	1913
इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया	1921
भारतीय रिजर्व बैंक	1935
भारतीय स्टेट बैंक	1955

भारतीय रिजर्व बैंक

- भारत का केन्द्रीय बैंक है।
- वर्ष 1930 में केन्द्रीय बैंकिंग जाँच समिति की सिफारिश के आधार पर भारत के केन्द्रीय बैंक के रूप में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (R.B.I.) की स्थापना RBI अधिनियम, 1934 के तहत। अप्रैल, 1935 को 5 करोड़ रुपये की अधिकृत पूँजी से हुई थी।
- 1 जनवरी, 1949 को भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इसके प्रथम गवर्नर सर ओसबोर्न स्मिथ (1935-37) थे।
- देश के स्वतंत्रता के समय में RBI के गवर्नर सर सी डी . देशमुख (1943-49) थे।

- रिजर्व बैंक के कार्यों का संचालन केन्द्रीय संचालक मण्डल (Central Board of Directors) द्वारा होता है।
- सम्पूर्ण देश में इसे चार भागों में बाँटा गया है - उत्तरी क्षेत्र, दक्षिणी क्षेत्र, पूर्वी क्षेत्र तथा पश्चिमी क्षेत्र।
- इसमें प्रत्येक के लिए 5 सदस्यों का एक स्थानीय बोर्ड (Local board) होता है।
- केन्द्रीय बोर्ड में 1 गवर्नर तथा अधिक से अधिक 4 डिप्टी गवर्नर होते हैं, जिनकी नियुक्ति केन्द्र सरकार पाँच वर्षों के लिए करती है।
- वर्तमान में RBI के 25वें गवर्नर शक्तिकांत दास (12 दिसम्बर, 2018 से लगातार) हैं।
- स्थानीय बोर्डों के कार्यालय नई दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता और मुम्बई में हैं।
- स्थानीय बोर्ड केन्द्रीय बोर्ड के आदेशानुसार कार्य करते हैं।
- रिजर्व बैंक का प्रधान अथवा केन्द्रीय कार्यालय मुम्बई में स्थित है।
- नई दिल्ली, कोलकाता तथा चेन्नई में स्थानीय प्रधान कार्यालय हैं।

RBI के कार्य

भारत में नए नोट जारी करने की व्यवस्था

- एक रुपये के नोट का सभी सिक्कों को छोड़कर रिजर्व बैंक को विभिन्न मूल्य वर्ग के नोटों को जारी करने का एकाधिकारक प्राप्त है।
- रिजर्व बैंक सरकार के प्रतिनिधि के रूप में एक रुपए के नोटों तथा सिक्कों एवं छोटे सिक्कों का देश में वितरण का कार्य करता है।
- करेन्सी नोट जारी करने के लिए वर्तमान में रिजर्व बैंक नोट प्रचालन की न्यूनतम निधि पद्धति (Minimum Reserve System) को अपनाता है। इस पद्धति के अंतर्गत रिजर्व बैंक के पास स्वर्ण एवं विदेशी ऋणपत्र कुल मिलाकर किसी भी समय 200 करोड़ रुपये के मूल्य से कम नहीं होने चाहिए। इनमें स्वर्ण का मूल्य (धातु तथा मुद्रा मिलाकर) 115 करोड़ रुपए से कम नहीं होना चाहिए। यह पद्धति रिजर्व बैंक ने 1957 के बाद अपनाई थी।



NOTE- नए नोट छापने की एक अन्य व्यवस्था भी है परन्तु इसका प्रयोग भारत में नहीं होता यह व्यवस्था अनुपाती आरसी व्यवस्था है (Practical Reserve system) इसके अन्तर्गत जिस अनुपात में नए नोट का मूल्य बढ़ता है उसी अनुपात में रखे गए कोष को बढ़ाना पड़ता है
NOTE - 1000 रुपये के नोटों का परिचालन 8 नवम्बर, 2016 से बंद हो गया है।

NOTE- सिक्के सीमित विधि ग्राह्य (Limited Legal Tender) हैं। भारत में कागजी नोट असीमित विधि ग्राह्य (Unlimited Legal Tender) हैं। इसका अर्थ यह है कि भुगतान का निपटारा करने के लिए सिक्कों का प्रयोग केवल एक सीमा तक ही किया जा सकता है। इसके विपरीत, कागजी नोटों के रूप में भुगतानों का निपटारा करने हेतु उनका प्रयोग असीमित मात्रा में किया जा सकता है।

सिक्कों का उत्पादन

- सिक्कों का उत्पादन करने तथा सोने और चाँदी की परख करने एवं तमगों का उत्पादन करने के लिए भारत सरकार की पाँच टकसालें मुम्बई, अलीपुर (कोलकाता), सैफाबाद (हैदराबाद), चेलपिल्ली (हैराबाद) तथा नोएडा में स्थित हैं।
- टकसालों में सिक्कों के अलावा विभिन्न प्रकार के पदकों (मेडल) का भी उत्पादन किया जाता है।
- **NOTE-** 25 पैसे तथा इससे कम मूल्य के सभी सिक्कों का परिचालन जुलाई, 2011 से बंद हो गया है। अर्थात् देश में अब 50 पैसे का सिक्का सबसे कम मूल्य की विधिग्राह्य मुद्रा है।

1. इण्डिया सिक्कोरिटी प्रेस , नासिक (महाराष्ट्र) -

- भारत प्रतिभूति में डाक सम्बन्धी लेखन सामग्री, डाक एवं डाक - भिन्न टिकटों, अदालती एवं गैर - अदालती स्टाम्पों, बैंकों (RBI तथा SBI) के चेकों, बॉण्डों, राष्ट्रीय बचत पत्रों आदि के अलावा राज्य सरकारों, सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों, वित्तीय निगमों आदि के प्रतिभूति पत्रों की छपाई की जाती है।

2. सिक्कोरिटी प्रिन्टिंग प्रेस , हैदराबाद

- सिक्कोरिटी प्रिन्टिंग प्रेस हैदराबाद की स्थापना दक्षिण राज्यों की डाक लेखन सामग्री की मांगों को पूरा

करने के लिए की गई तथा यहाँ पूरे देश की केन्द्रीय उत्पाद शुल्क स्टाम्प की छपाई भी होती है।

3. करेन्सी नोट प्रेस , नासिक (महाराष्ट्र)

- नोट प्रेस 1, 2, 5, 10, 50, 100, 500 तथा 2000 रुपये के बैंक नोट छापती है और उनकी पूर्ति करती है।

4. बैंक नोट प्रेस , देवास (मध्य प्रदेश)

- देवास स्थित बैंक नोट प्रेस 20, 50, 100, 500 और 2000 रुपये के उच्च मूल्य वर्ग के नोट छापती है।
- बैंक नोट प्रेस का स्याही का कारखाना प्रतिभूति पत्रों की स्याही का निर्माण करता है।

5. साल्वोनी (पं. बंगाल) तथा मैसूर (कर्नाटक) के भारतीय रिजर्व बैंक ने दो नयी एवं अत्याधुनिक करेन्सी नोट प्रेस स्थापित की गयी है। यहाँ भारतीय रिजर्व बैंक के नियन्त्रण में करेन्सी नोट छापे जाते हैं।

6. सिक्कोरिटी पेपर मिल , होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

- बैंक और करेन्सी नोट कागज तथा गैर - ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर की छपाई में प्रयोग होने वाले कागज का उत्पादन करने के लिए सिक्कोरिटी पेपर मिल होशंगाबाद में 1967-68 में चालू की गई थी।

सरकार के बैंकर का कार्य करना

- सरकारी बैंकर के रूप में यह निम्नलिखित कार्य सम्पन्न करता है-
- (i) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से धन प्राप्त करना और इनके आदेशानुसार इनका भुगतान करना।
- (ii) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से जनता से ऋण प्राप्त करना।
- (iii) सरकारी कोषों का स्थानान्तरण करना।
- (iv) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के लिए विदेशी विनिमय का प्रबन्ध करना।
- (v) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों को आर्थिक सलाह देना।

	<p>की कुल वैधानिक जमा राशि के एक निश्चित प्रतिशत के बराबर उनके मूल कोटे निर्धारित कर दिया गया।</p> <ul style="list-style-type: none"> निर्धारित कोटे की सीमा तक रिजर्व बैंक से बैंक दर पर ऋण लिया जा सकता है। इससे अधिक ऋण देने पर बैंक दर के अतिरिक्त ब्याज की दंड दर (Penal rate) देनी पड़ती है। बैंक दर में वृद्धि या कमी व्यावसायिक बैंक द्वारा आवंटित ऋणों पर ब्याज दर कम या ज्यादा करने के लिए होता है। NOTE : बेस रेट वह दर है जिसके नीचे अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक किसी भी तरह का ऋण नहीं दे सकते हैं। यह वर्ष 2010 में पूर्व प्रचलित प्राइम लेंडिंग रेट नोट (PLR) के स्थान पर अपनाया गया है। 		<p>मुद्रा में कमी करना चाहता है, तो वह इस अनुपात में वृद्धि कर देता है।</p>
<p>नकद आरक्षण अनुपात (Cash Reserve Ratio)</p>	<ul style="list-style-type: none"> प्रत्येक व्यापारिक बैंक अपनी कुछ जमाओं का एक निर्धारित प्रतिशत रिजर्व बैंक के पास सदैव नकद रूप में रखता है जिसे नकद आरक्षण अनुपात (CRR) कहते हैं। रिजर्व बैंक इस नकद पर कोई ब्याज बैंक को नहीं देता है। जब रिजर्व बैंक साख मुद्रा वृद्धि करना चाहता है, तो वह इस अनुपात में कमी कर देता है। और यदि वह साख 	<p>वैधानिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio)</p>	<ul style="list-style-type: none"> प्रत्येक बैंक को कुल जमा राशि के एक निश्चित प्रतिशत को अपने पास नकद रूप में या अन्य तरल परिसम्पत्तियों के रूप में (सोना अनुमोदित प्रतिभूतियाँ- सरकारी प्रतिभूतियाँ) रखना पड़ता है जिसे वैधानिक तरलता (SLR) कहा जाता है। यदि रिजर्व बैंक को साख मुद्रा का प्रसार करना होता है, तो इस अनुपात को कम कर दिया जाता है, ताकि बैंकों के पास तरल कोषों में वृद्धि हो सके। यदि साख का संकुचन करना होता है, तो इस अनुपात को बढ़ा दिया जाता है, ताकि बैंकों के पास तरल कोष कम उपलब्ध हो।
		<p>रेपो दर (Repo Rate)</p>	<ul style="list-style-type: none"> रेपो दर वह दर है जिस पर रिजर्व बैंक बैंकों को अल्पकालीन ऋण देकर अर्थव्यवस्था में तरलता की अतिरिक्त मात्रा जारी करता है। इसका प्रभाव व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवंटित ऋणों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। इसका प्रयोग तात्कालिक मुद्रा के प्रसार में वृद्धि या कमी के लिए किया जाता है।

(B) अंतिम 30 दिन (1 माह) - परिवार द्वारा किया गया उपभोग व्यय
NOTE- 2011-12 में सुरेश तेंदुलकर समिति की सिफारिशों के आधार पर गणना में MRP को ही अपना गया

(3.) Modified Mixed Reference Period

- 365 दिन= शिक्षा , स्वास्थ्य , कपडे , जूते , वस्तु
 - 30 दिन = ईंधन , विद्युत , मकान किराया , शेष खाद्य वस्तु
 - 7 दिन = खाद्य तेल , अंडे सब्जियां , जल , मसाले , तंबाकू
- NOTE-** सी. रंगराजन समिति ने MMRP को अपनाया था।

बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2020 (MPI)

- आरंभ- 2010 से
- संस्थाएं - संयुक्त सहयोगी संस्था राष्ट्र विकास कार्यक्रम ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी
- आधार - स्वास्थ्य , शिक्षा व जीवन स्तर (3 आधार)
- मानक - 10
- इसके आधार पर भारत का स्थान 62वाँ (out of 107)
- भारत - MPI = 0123
- भारत में गरीबी -27.91 %

राष्ट्रीय बहु - आयामी गरीबी सूचकांक 2021(NMPI)

- जारी कर्ता- नीति आयोग
- इसके आधार पर भारत का स्थान 66वाँ (out of 109)
- भारत में गरीबी - 25%
- आधार- Nation Family Health Survey -4 (वर्ष 2015-16)
- सर्वाधिक गरीबी - बिहार
- न्यूनतम गरीबी - केरल

NOTE- राजस्थान का स्थान 8वाँ

- राजस्थान - NMPI 0.14
- राजस्थान में गरीबी 29.46 %
- सर्वाधिक गरीबी (1.) बाडमेर (56.13%) (2.) जैसलमेर
- न्यूनतम गरीबी (1.) झुंझुनू (12.80%) (2.) कोटा

अध्याय - 17

केंद्र सरकार की योजनाएँ

एक राष्ट्र - एक राशन कार्ड योजना

- केन्द्रीय पभोक्ता मामले खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने 30 जून, 2020 तक पूरे देश में एक राष्ट्र - एक राशन कार्ड योजना लागू करने की घोषणा की है।
- खाद्य सुरक्षा की समस्या से निपटने के लिए भारत सरकार ने 'वन नेशन-वन राशन कार्ड' (One Nation One Ration Card- ONORC) योजना की शुरुआत की है। ONORC योजना किसी लाभार्थी को उसका राशन कार्ड कहीं भी पंजीकृत होने से स्वतंत्र रखते हुए देश में कहीं भी अपने कोटे का खाद्यान्न प्राप्त कर सकने की अनुमति देती है।

किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमण्डलीय समिति (Cabinet Committee on Economic Affairs-CCEA) ने किसानों को वित्तीय और जल सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से **किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान-कुसुम** (Kisan Urja Suraksha evam Utthaan Mahabhiyan-KUSUM) को शुरू करने की मंजूरी दे दी है।

लक्ष्य

- तीनों घटकों को शामिल करने वाली इस योजना का लक्ष्य वर्ष 2022 तक कुल 25,750 मेगावाट की सौर क्षमता स्थापित करना है।

योजना के लाभ

- इस योजना से ग्रामीण भू-स्वामियों को स्थायी व निरंतर आय का स्रोत प्राप्त होगा।
- किसान उत्पादित ऊर्जा का उपयोग सिंचाई ज़रूरतों के लिए कर पाएंगे तथा अतिरिक्त ऊर्जा बिजली वितरण कंपनियों को बेच पाएंगे। इससे किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होगी।
- इस योजना से कार्बन डाइऑक्साइड में कमी आएगी और वायुमंडल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। योजना



के तीनों घटकों को सम्मिलित करने से पूरे वर्ष में कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में 27 मिलियन टन की कमी आएगी।

- घटक बी के अंतर्गत सौर कृषि पंपों से प्रतिवर्ष 1.2 बिलियन लीटर डीजल की बचत होगी। इससे कच्चे तेल के आयात में खर्च होने वाली विदेशी मुद्रा की भी बचत होगी।
- इस योजना में रोजगार के प्रत्यक्ष अवसरों को सृजित करने की क्षमता है। स्व-रोजगार में वृद्धि के साथ इस योजना से कुशल व अकुशल श्रमिकों के लिए 6.31 लाख रोजगार के नए अवसरों के सृजित होने की संभावना है।

जल जीवन मिशन

- जल जीवन मिशन की घोषणा अगस्त 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी, इस मिशन का प्रमुख उद्देश्य वर्ष 2024 तक सभी ग्रामीण घरों में पाइप जलापूर्ति (हर घर जल) सुनिश्चित करना है।
- जल जीवन मिशन की प्राथमिकता देश भर के सभी भागों में सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना है।
- इस मिशन के तहत कृषि में पुनः उपयोग के लिए वर्षा जल संचयन, भू-जल पुनर्भरण और घरेलू अपशिष्ट जल के प्रबंधन हेतु स्थानीय बुनियादी ढाँचे के निर्माण पर भी ध्यान दिया जाएगा।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना एक केन्द्रीय क्षेत्रक योजना है।

- इसकी शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 24 फरवरी, 2019 को लघु एवं सीमान्त किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य की गई है।
- इस योजना के तहत पात्र किसान परिवारों को प्रतिवर्ष 6000 के दर से प्रत्यक्ष आय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। यह आय सहायता 2,000 रुपए की तीन सामान किस्तों में लाभान्वित किसानों की बैंक खातों में प्रत्यक्ष रूप से हस्तांतरित की जाती है।

व्यापारियों और स्वरोजगार योजना

- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने रांची में व्यापारियों और स्वरोजगार वाले व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना शुरू की है।
- यह पेंशन योजना उन व्यापारियों (दुकानदारों / खुदरा व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों) के लिए है जिनका वार्षिक कारोबार 1.5 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है।
- इस राष्ट्रव्यापी शुरुआत से इस योजना के तहत भावी लाभार्थियों के लिए नामांकन की सुविधा देश भर में स्थित 3.50 लाख कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) के माध्यम से उपलब्ध कराई गई है।
- सरकार ने व्यापारियों (दुकानदारों/ खुदरा व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों) के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना को मंजूरी दी है।
- यह 18 से 40 वर्ष की आयु के व्यापारियों के लिए एक स्वैच्छिक और अंशदायी पेंशन योजना है। इसमें लाभार्थी की आयु 60 वर्ष होने पर न्यूनतम 3,000 रुपये मासिक पेंशन देने का प्रावधान है।
- लाभार्थी को आयकर दाता नहीं होना चाहिए तथा उसे ईपीएफओ/ ईएसआईसी/ एनपीएस (सरकार)/ पीएम-एसवाईएम का सदस्य भी नहीं होना चाहिए।
- इस योजना के तहत केंद्र सरकार का मासिक अंशदान में 50% योगदान होगा और शेष 50% अंशदान लाभार्थी द्वारा किया जाएगा।
- मासिक योगदान को कम रखा गया है। उदाहरण के लिए, एक लाभार्थी को 29 वर्ष की आयु होने पर केवल 100 रुपये प्रति माह का छोटा सा योगदान करना आवश्यक है।
- यह पेंशन योजना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूसरे कार्यकाल की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है।
- वर्ष 2019-20 तक 25 लाख लाभार्थियों तथा 2023-2024 तक 2 करोड़ लाभार्थियों को इस योजना में शामिल करने का लक्ष्य रखा गया है। इस योजना से देश के लगभग 3 करोड़ व्यापारियों के लाभान्वित होने की उम्मीद है।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

- RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से **74 प्रश्न** आये थे , जबकि cutoff मात्र **64 प्रश्न** पर गयी थी /
- दोस्तों, राजस्थान SI 2021 (15 सितम्बर) की परीक्षा में हमारे नोट्स में से पेपर - 1 & 2 में 200 प्रश्नों में से **126 प्रश्न** आये थे, cutoff से ज्यादा /

अन्य रिजल्ट -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1 st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

 **INFUSION NOTES**
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें



Whatsapp - <https://wa.link/nr1tcz>

Online order - <https://cutt.ly/o0zXjhb>

whatsa pp- <https://wa.link/nr1tcz> 2 web.- <https://cutt.ly/o0zXjhb>